ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 14 कुल पृष्ठ-8 19 से 25 मार्च, 2020 दयानन्दाब्द 196 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 चै. कृ.-11

आर्य समाज के महान संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 83 वें जन्मदिवस के अवसर पर

बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता, धार्मिक अन्धविश्वास एवं गोहत्या के विरुद्ध संकल्प के साथ हुआ सम्पन्न

कोरोना वायरस के विरुद्ध पूरे देश में यज्ञ हवन युद्ध स्तर पर आयोजित किये जायें

– स्वामी आर्यवेश

जीवन में परोपकार करना ही वास्तविक यज्ञ है

– स्वामी चन्द्रवेश

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक हरियाणा में गत् 3 मार्च, 2020 को प्रारम्भ हुआ 13वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ 15 मार्च, 2020 को उत्साह एवं जोश–खरोश के साथ सम्पन्न हो गया। यह चतुर्वेद पारायण महायज्ञ आर्य समाज के महान संन्यासी, युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के जन्मदिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष किया जाता है। इस महायज्ञ की विशेषता है कि इसमें आहुतियाँ देने वाले हजारों स्त्री–पुरुष विभिन्न सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध संकल्प लेते हैं। विदित हो कि आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे बेटी बचाओ अभियान एवं नशाखोरी, अश्लीलता, धार्मिक अन्धविश्वास तथा गोहत्या जैसी ज्वलन्त समस्याओं के विरुद्ध अभियान को मजबूती प्रदान करने के लिए यह यज्ञ प्रतिवर्ष होता है जिसमें समाज के प्रतिष्ठित लोग जन–प्रतिनिधि (पंच, सरपंच, पार्षद् आदि) डॉक्टर, वकील, युवा एवं आम जनता बढ़–चढ़कर भाग लेती है। स्वामी इन्द्रवेश जी को उनके जन्मदिवस पर स्मरण करने तथा श्रद्धांजलि अर्पित करने का यह अत्यन्त प्रभावशाली रचनात्मक कार्यक्रम होता है। इस चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत् के तपोनिष्ठ संन्यासी वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य एवं दर्शनाचार्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज ने निरन्तर 13 दिन तक जहाँ यज्ञ का संचालन किया वहीं उनके सारगर्भित प्रवचन भी होते रहे। पूर्णाहुति के अवसर पर स्वामी जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को परोपकार एवं समाजसेवा के लिए समर्पित रहना चाहिए क्योंकि परोपकार का ही दूसरा नाम यज्ञ है। उन्होंने कहा कि अग्निहोत्र से जहाँ पर्यावरण शुद्ध होता है वहीं व्यक्ति को परोपकार करने की प्रेरणा भी मिलती है।

यज्ञ के दौरान जनता को सम्बोधित करने और अपने विचारों से प्रेरित करने के लिए जिन वैदिक विद्वानों ने यज्ञ में पधारकर प्रवचन दिये उनमें मुख्य रूप में डॉ. बलवीर आचार्य, पूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, डॉ. सुरेन्द्र कुमार अध्यक्ष संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, स्वामी रामवेश जी अध्यक्ष नशाबन्दी परिषद् हरियाणा, बहन पूनम आर्या राष्ट्रीय अध्यक्ष बेटी बचाओ अभियान, डॉ. जगदेव सिंह विद्यालंकार, रोहतक, श्री बिरजानन्द जी महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, डॉ. ब्रह्मदेव वेदालंकार दिल्ली, श्री दयानन्द शास्त्री टिटौली, स्वामी नित्यानन्द सफीदों, डॉ. किरणमयी अतिरिक्त निदेशक शिक्षा विभाग हरियाणा, डॉ. दिलबाग सिंह अहलावत संयुक्त निदेशक शिक्षा विभाग हरियाणा, श्रीमती विमलेश जिला कार्य परियोजना अधिकारी, रोहतक, प्रो. वीणा फौगाट एवं प्रो. किरण मलिक, आचार्य हरिदत्त उपाध्याय गुरुकुल लाढ़ौत, श्री अजीत सिंह एडवोकेट पूर्व विधायक झज्जर, स्वामी सोम्यानन्द मथुरा, डॉ. समुन्दर सिंह लाठर जुलाना, प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य सत्य प्रकाश आर्य रोहतक, नगर निगम रोहतक के अध्यक्ष श्री मनमोहन गोयल, समाजसेवी श्री सुभाष गुप्ता, सेवानिवृत्त कर्नल आर.के. सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। यज्ञ का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अपने ओजस्वी उद्बोधन से किया और उन्होंने यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप पर प्रकाश डाला।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भी बीच–बीच में अपने प्रवचनों से जनता को लाभान्वित किया। यज्ञ में श्री सीताराम आर्य एवं ब्र. उदयवीर आर्य ने अति सुन्दर वेद पाठ द्वारा सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

8 मार्च, 2020 को महिला दिवस के अवसर पर भव्य महिला सम्मेलन, 13 मार्च, 2020 को स्वामी इन्द्रवेश जन्मोत्सव एवं 14 व 15 मार्च, 2020 को वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। स्वामी इन्द्रवेश जी के जन्मदिवस 13 मार्च को तीन संन्यासी व एक वानप्रस्थी दीक्षित हुए और उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी की विशेष प्रवृत्ति के अनुरूप अपना जीवन आर्य समाज के कार्य के लिए समर्पित किया। संन्यास लेने वाले महानुभावों में स्वामी आत्मानन्द, स्वामी देवानन्द एवं स्वामी मुनीश्वरानन्द थे तथा वानप्रस्थ की दीक्षा लेने वाले श्री शमशेर सिंह नम्बरदार ग्राम लाडवा, जिला–हिसार ने विधिवत वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर हिसार जिले में आर्य समाज का कार्य करने का व्रत लिया। उनका नाम वानप्रस्थी शमशेर मुनि रखा गया।

शेष पृष्ठ 7 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

बलिदान दिवस 23 मार्च पर विशेष

देशभक्ति ही जिनकी इबादत थी – भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव

– मनोज जैन

23 मार्च, 1931 का वो काला दिन जिस दिन भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव तीनों को रात के अंधेरे में फांसी दी गई। शाम 4 बजे सभी बैरकों के कैदी अपनी–अपनी कोठरियों में बंद हो गये, सबकी हाजिरी हो चुकी थी। इन तीनों वीरों को कोठरियों के अंदर ही स्नान कराया गया वैसे इन्हें तीन बजे दिन में ही फांसी लगने की सूचना दी जा चुकी थी। इसी जेल में एक सिख चीफ वार्डन था – चतर सिंह जो सेना का भूतपूर्व हवलदार था। वह एक धार्मिक स्वभाव का तथा मधुरभाषी सिख था। जब चतर सिंह को यह ज्ञात हुआ कि भगत सिंह को फांसी दी जाने वाली है, तो वह शीघ्र भगत सिंह के पास पहुँचा और बोला , ''बेटा! अब तो आखिरी वक्त आ पहुँचा है मैं तुम्हारे बाप के बराबर हूँ। मेरी एक बात मान लो.......।'

परमात्मा को याद नहीं करूँगा

'कहिए, क्या हुक्म है?' उसी मस्ती से हंसते हुए भगत सिंह ने पूछा। मेरी सिर्फ एक दरख्वास्त है कि आप इस आखिरी वक्त में वाहेगुरु का नाम ले लो और गुरुवाणी का पाठ करो। यह लो गुटका, तुम्हारे लिए लाया हूँ। चतर सिंह बोला। भगत सिंह ठहाका लगाकर हंसे और बोले, आप की इच्छा पूरी करने में तो मुझे कोई एतराज नहीं हो सकता था, अगर आप कुछ समय पहले कहते। अब जबकि आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ, तो वह कहेगा कि यह (भगतसिंह) बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद किया नहीं अब मौत सामने आने लगी तो मुझ याद करने लगा है। इसलिए बेहतर होगा कि जिस तरह मैंने पहले जिन्दगी गुजारी है, उसी तरह मुझे इस दुनिया से जाने दीजिए। मुझ पर यह इल्जाम तो कई लगायेंगे कि मैं नास्तिक था और मैंने परमात्मा पर विश्वास नहीं किया, लेकिन यह तो कोई नहीं कहेगा कि भगतसिंह बुजदिल और बेईमान भी था, आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर उसके पांव लड़खड़ाने लगे थे।'

फांसी का आदेश

इस समय वह लिंकन का जीवन चरित्र पढ़ने में तल्लीन थे, तभी जेल के अधिकारी आ गये और बोले, सरदार जी फांसी का आदेश आ गया है, आप तैयार हो जायें, उनकी नजर किताब पर से नहीं हटी पढ़ते–पढ़ते वह बोले, ''रुको! एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है।'' थोड़ी देर तक किताब के उस भाग को पढ़ लेने पर उन्होंने किताब उछाल दी और बोले 'चलो' और वह कोठरी से बाहर आ गये।

काले कपड़े

फांसी के तख्ते की ओर ले जाने से पहले, जेल के अधिकारियों द्वारा इन तीनों वीरों, भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव से, जेल के नियमों के अनुसार, काले कपड़े पहनने को कहा गया, लेकिन भगतसिंह इसके लिए राजी न हुए और उन्होंने कहा, ''मैं चोर, लुटेरा, डाकू, खूनी या कोई मामूली अपराधी नहीं हूँ।' इस पर चीफ वार्डन तथा उप अधीक्षक की कुछ भी कहने की हिम्मत न हुई, अतः उन्होंने इस मामले में दरोगा अकबर खाँ से बात की। दरोगा अकबर खाँ उनके पास आया उसने उनसे मिन्नत की कि वे जीवन के अन्तिम समय में इस प्रकार का व्यवहार न करे तब भगतसिंह मान गये।

उनके चेहरे खिले हुए थे

तीनों क्रांतिकारी कोठरी से बाहर निकले। उन्होंने एक–दूसरे को देखा, तीनों आपस में गले मिले। तीनों हंस रहे थे, उनके चेहरे खिले हुए थे, गम का कोई भी निशान उनके चेहरों पर न था, वे सीना फुलाये हुए अकड़कर, मस्ती से झूमते हुए चल रहे थे, परन्तु जेल के उन अधिकारियों के चेहरों पर मुर्दानी जैसी छाई हुई थी। जो उन्हें ले जा रहे थे, उनके चेहरों पर दुःख और अवसाद की रेखाएँ साफ दिखाई दे रही थी। भगतसिंह बीच में थे और राजगुरु दाहिनी ओर थे तथा सुखदेव बाईं ओर। भगतसिंह की दोनों भुजाओं में अन्य दो साथियों की भुजाएं थी। तीनों ही मौत से एकदम बेखबर से लग रहे थे और झूम–झूमकर गा रहे थे –

दिल से निकलेगी न मरकर वतन की उल्फत।
मेरी मिट्टी से भी खुशबू–ए–वतन आयेगी।।

सारा माहौल गमगीन हो चला था, परन्तु इन देशभक्तों के चेहरों से एक विचित्र तेज चमक रहा था। तब भारत माता के ये लाड़ले सपूत, जेल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से घिरे हुए, बढ़ चले महाप्रयाण की ओर फांसी के फंदे को गले लगाने।

हथकड़ी नहीं लगाई गई

शाम 6.35 मिनट पर ये तीनों, फांसी दिये जाने वाली जगह पर पहुंच गये। उस समय जेल अधीक्षक, आई. जी. पुलिस, डिप्टी कमिश्नर लाहौर तथा आई. जी. जेल भी वहाँ उपस्थित थे। तीनों वीर बुलंद आवाज में नारे लगाने लगे – इंकलाब जिन्दाबाद,' अंग्रेजी साम्राज्यवाद का नाश हो, राष्ट्रीय झंडा ऊँचा रहे, ऊँचा रहे, डाउन–डाउन यूनियन जैक। इन नारों को जेल के अन्य कैदियों ने भी सुना, तब उन्होंने अनुमान लगाया कि इन महान क्रांतिकारियों की महाप्रयाण वेला आ गई है, अतः अपनी–अपनी कोठरियों से ही ऊँची–ऊँची आवाजों में इन नारों को दोहराकर ही उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी। जब तीनों फांसी के तख्ते के पास पहुँचे, तो फांसी के नियमों के अनुसार डिप्टी कमिश्नर वहां पर खड़ा था। भगतसिंह तथा उनके साथियों को हथकड़ी नहीं लगाई थी, क्योंकि जेलर ने उन्हें पहले ही कह दिया था कि उन्हें हथकड़ी नहीं लगाई जाये तथा मुँह पर काला कंटोप न चढ़ाया जाये। जेलर इनकी अंतिम इच्छा को मान गया था, किन्तु इस समय उन्हें देखकर डिप्टी कमिश्नर यकायक सहम गया, तब जेलर मोहम्मद अकबर ने उन्हें सारी बात बताई और विश्वास दिलाया कि वे कुछ नहीं करेंगे। फांसी के तख्ते पर चढ़ने से पहले भगतसिंह ने अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर को सम्बोधित करते हुए कहा, मजिस्ट्रेट। तुम भागयशाली हो, जो तुम्हें आज यह देखने का अवसर मिला है कि भारतीय क्रांतिकारी किस तरह प्रसन्नता से अपने सर्वोच्च आदर्शों के लिए मौत को भी गले लगा सकते हैं।

आदर्श पर अडिग भगतसिंह

निःसंदेह जीवन के अंतिम क्षणों में भी इस प्रकार के आदर्श पर अडिग रहने वाले भगत सिंह की बात को सुनकर, मजिस्ट्रेट प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका होगा। मजिस्ट्रेट से इतना कहने के बाद, वह फांसी के तख्ते पर चढ़ गये। तीन फंदे टंगे हुए थे। यहां भी तीनों उसी क्रम से बीच में भगतसिंह दाहिनी ओर राजगुरु तथा बाईं ओर सुखदेव खड़े हो गये। तीनों ने फिर गरजती आवाज में नारे लगाये – इंकलाब जिन्दाबाद साम्राज्यवाद मुर्दाबाद तीनों ने फंदे की ओर देखा, मुस्कराये, उसे चूमा और गले में डाल लिया, जैसे रणभूमि में जाने के लिए फूलों की माला डाल रहे हों। भगत सिंह ने जल्लाद से फंदों को ठीक कर लेने को कहा। शायद उसने यह शब्द अपने जीवन में पहली बार सुने थे। साधारण अपराधियों के तो तख्ते पर चढ़ने में ही पैर लड़खड़ाने लगते हैं, परन्तु भगत सिंह फंदा ठीक करने को कह रहे थे। जल्लाद ने फंदे ठीक किये। चर्खी घुमाई। तख्ता हटा और ये तीनों वीर मातृभूमि की बलिवेदी पर शहीद हो गये। भारत भूमि की आजादी के लिए एक चमकता हुआ सूर्य सदा–सदा के लिए अस्त हो गया।

रात में फांसी

सरकारी तार के अनुसार यह फांसी शाम 7 बजे दी जानी थी। श्री मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है कि यह फांसी 7.15 मिनट पर दी गई। कुछ दूसरी पुस्तकों में यह समय 7.30 बजे अथवा 7.33 मिनट लिखा है। यहां विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि सामान्य तौर पर फांसी सुबह दी जाती है, जबकि भगत सिंह के मामले में इस नियम का पालन नहीं किया। उन्हें रात में फांसी दी गई। फांसी के बाद व्यक्ति का मृत शरीर उसके घरवालों को सौंप दिया जाता है, किन्तु इन महान क्रांतिकारियों के घर इस बात की सूचना भी नहीं दी गई कि उन्हें फांसी दी जा रही है। इससे अधिक जालिमाना हरकत और क्या हो सकती है?

दीवारों पर पोस्टर

अंग्रेज सरकार ने अपनी ओर से दूसरी सुबह केवल एक औपचारिकता पूरी करने के लिए जनता के लिए यह सूचना दी। लाहौर के जिलाधीश की ओर से दीवारों पर 24 मार्च को निम्नलिखित पोस्टर चिपकाये गये, जनता को सूचना दी जाती है कि भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव के शव, जिन्हें कल 23 मार्च को शाम के समय फांसी दी गई थी, जेल के बाहर सतलुज के तट पर ले जाये गये और वहां सिखों तथा हिन्दुओं के रीति–रिवाजों के अनुसार उनका दाह संस्कार कर दिया गया और उनकी अस्थियों को नदी में डाल दिया गया।

वैदिक सांस्कृतिक विरासत सम्भाल कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्य गौरव दिवस

आर्य समाज स्थापना दिवस व नव–सम्वत् वर्ष 2077 के अवसर पर 'आर्य गौरव दिवस' का आयोजन 5 अप्रैल, 2020 (रविवार) को दोपहर 2.30 बजे से शाम 6 बजे तक स्थानीय एस.एल. भवन्स स्कूल, नजदीक शिवाला भाईयां, अमृतसर में आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में उच्च स्तरीय विद्वानों, संन्यासियों, भजनोपदेशकों का आगमन हो रहा है तथा पंजाब प्रदेश के सभी जिला भर की धार्मिक, सामाजिक, संगठनों के धर्मनिष्ठ एवं सांस्कृतिक विरासत के पक्षधर बुद्धिजीवी विशेष तौर पर आमंत्रित हैं।

आप अपने परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित उपस्थित होकर धर्म व अपनी संस्कृति के साथ जुड़कर आर्य समाज के संगठन शक्ति का परिचय दें।

– बलवंत राये आहूजा,
मो.:–9815240107, 9888161380, 9872713540

आर्य समाज स्थापना दिवस पर विशेष

आर्य समाज स्थापना का उद्देश्य

– डॉ. महेश विद्यालंकार

> यह निर्विवाद सत्य है कि आर्य समाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी है। जीवन जगत को देने के लिए इसके पास अमूल्य प्रेरक ज्ञान, विचार एवं चिन्तन है। आज के भूले भटके मानव समाज को वैदिक चिन्तन, प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर सकता है। व्यवहारिक रूप से यह कथन सच है। जहाँ–जहाँ आर्य समाज है वहाँ–वहाँ जीवन है। आज ज्वलन्त प्रश्न हम सबके सामने है ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के विचारों, सिद्धान्तों व आदर्शों को कैसे प्रचारित–प्रसारित और जन–जन तक पहुंचाया जाये। विचारों, सिद्धान्तों, एकता, संगठन और प्रचार–प्रसार से व्यक्ति, संस्थाएं व संगठन जीवित, जागृत तथा अमर रहते हैं। इस समय हम सबका कर्त्तव्य है व्यर्थ के झगड़े, विवाद, स्वार्थ, अहंकार आदि को छोड़कर ऋषि मिशन तथा आर्य समाज की रक्षा, उन्नति, प्रगति के लिए त्याग व सेवाभाव से सोचें यही आर्य समाज स्थापना दिवस का संदेश है।

महर्षि दयानन्द का स्वप्न, उद्देश्य और प्रयास था। पुनः देश–देशान्तरों में सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार तथा स्थापना हो। वैदिक धर्म की जगह नाना पंथों, सम्प्रदायों, गुरुओं, महन्तों आदि ने ले ली थी। वेदज्ञान विस्मृत हो रहा था। सच्चे धर्म को भूलकर लोग सम्प्रदायों में बंट रहे थे। चारों ओर घोर अज्ञान, अविद्या, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास आदि फैला हुआ था। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में ऋषिवर का आगमन हुआ। उनका सम्पूर्ण जीवन विरोधों संघर्षों एवं कठिनाइयों में निकला। उन्होंने अवैदिक, अवैज्ञानिक, मिथ्या बातों को हटाने तथा मिटाने के लिए क्रांतिकारी विचारधारा की ज्वाला को प्रज्ज्वलित किया, जो आर्य समाज कहलाया। आर्य समाज स्वामी दयानन्द के विचारों, सिद्धान्तों, आदर्शों एवं अधूरे कार्यों का उत्तराधिकारी है। उन्हीं के उद्देश्यों की प्रचार–प्रसार एवं पूर्ति के लिए आर्य समाज, सभाएं, संगठन, संस्थाएं, गुरुकुल डी.ए.वी. आदि बनाए गये। आर्य समाज की स्थापना के बाद स्वामी जी असमय व अचानक हमसे विदा हो गये। उन्हें कार्य करने का बहुत थोड़ा समय मिला। उनके अनुयायियों, दीवानों, जनून वाले और पागल कहलाने वाले लोगों ने आर्य समाज को राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक क्षेत्रों में बुलन्दियें पर पहुंचा दिया। ऋषि के बाद की पीढ़ी के तप, त्याग, तपस्या सेवा ऋषिभक्ति और बलिदान के अमर प्रेरक उदाहरण सुनते तथा पढ़ते हैं तो हृदय शत–शत् नमन करने लगता है। अतीत साक्षी है कि आर्य समाज का प्रत्येक क्षेत्र में ऐतिहासिक, उल्लेखनीय स्मरणीय और बन्दनीय योगदान रहा है।

आर्य समाज कोई पंथ, मजहब व सम्प्रदाय नहीं है। आर्य समाज वैचारिक, क्रांतिकारी, सुधारवादी, प्रगतिशील तथा मानवतावादी विचारधारा है। यह सुधारवादी वैचारिक आन्दोलन है। इसका मुख्य उद्देश्य कृण्वन्तो विश्वमार्यम् और संसार का उपकार करना है। इसके पास सत्य एवं वेद आधारित व विज्ञान सम्मत वैचारिक सम्पदा है। विचारों को निर्माण, सुधार एवं परिवर्तन की मजबूत कड़ी माना जाता है। वेद, ऋषि दयानन्द और आर्य समाज संसार को सद्विचार देता है। विचारों से ही व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व को सन्मार्ग की प्रेरणा व दिशा मिलती है। वेद प्रचार आर्य समाज को वसीयत, विरासत व दायित्व में मिला हैं वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। आर्य समाज के अलावा कोई नहीं मानता व कहता है। वेद प्रचार आर्य समाज का मुख्य कार्य तथा उद्देश्य है। वेद प्रचार पढ़ने तथा न होने के कारण संसार में ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा गुरुवाद आदि अवैदिक बातें तेजी से बढ़ तथा फैल रही हैं। धर्म भक्ति परमात्मा तीर्थ, मंदिर आदि सभी बाजार एवं व्यापार बनते जा रहे हैं। इन्हीं गलत बातों, बुराईयों एवं मिथ्या बातों को रोकने–टोकने के लिए आर्य समाज बना था। आर्य समाज गलत बातों का खण्डन और सत्य विचारों का मण्डन करता है। आर्य समाज ने महा चौकीदार की भूमिका निभाई। जागते रहो, जागते रहो, स्वयं जागो और दूसरों को भी सावधान एवं जागरूक बनाए रखो। आज वेद प्रचार घट रहा है। गौण कार्य स्कूल, औषधालय, बरातघर, दुकानें, मैरिज ब्यूरों आदि बढ़ व खुल रहे हैं। इनमें समाज मंदिरों की सात्विकता, धार्मिकता, पवित्रता और भक्ति पूर्ण वातावरण विकृत व दूषित हो रहा है। हमारे दैनिक, साप्ताहिक उत्सवों, यज्ञों, सत्संग आदि से जो प्रेरक चिन्तन, विचार संदेश तथा आर्य समाज से जुड़ने की वैचारिक चेतना जागृत होनी चाहिए वैसी इन कार्यक्रमों से नहीं हो पा रही है। यह चिन्तनीय पहलू है। हम मूल उद्देश्यों से हटते व कटते जा रहे हैं। युवापीढ़ी हमसे दूर हो रही है। हमारी दैनिक साप्ताहिक यज्ञों, कथाओं उत्सवों आदि में संख्या घट रही है। पुराने तेजी से जा रहे हैं। नये बन भी नहीं रहे हैं और बनाए भी नहीं जा रहे हैं किसी को ऋषि मिशन, वेद प्रचार तथा आर्य समाज की चिन्ता, बेचैनी और पीड़ा बेचैन नहीं कर रही है।

आर्य समाज के अनुयायी, सदस्य, विद्वान, उपदेशक, भजनोपदेशक, संन्यासी आदि नहीं बन रहे हैं। हमारा प्रभाव, पहचान, विश्वसनीयता आदि घट व कम हो रही है। ऋषि ने जिन बातों का विरोध किया था हम वही बातें करने व कराने लगे हैं। जो समाज में होना चाहिए वह ही नहीं हो रहा, जो नहीं होना चाहिए वह खूब हो रहा है। वर्तमान में आर्य समाज बाहर से भवन, सम्पत्ति, स्कूल, कालेज, संस्थाओं, आश्रमों, संगठनों आदि की दृष्टि से खूब लम्बा–चौड़ा व फैला हुआ दिखाई दे रहा है मगर रचनात्मक, निर्माणात्मक, गुणात्मक, सत्य, धर्म एवं सिद्धान्त आदि की दृष्टि में ये कमजोर व खोखले हो रहे हैं। व्यर्थ के विवादों, मतभेदों, झगड़ों, स्वार्थ, अहंकार आदि के कार्यों में शक्ति, सोच, समय, धन एवं भागदौड़ लग रही है। ऋषि मिशन आर्य समाज और वेद प्रचार के लिए एक झण्डे के नीचे होकर कोई काम नहीं करना चाहता है। अपने–अपने अलग–अलग संगठन, संस्थाएं, आश्रम आदि बना लिये हैं। इससे आर्य समाज का धन और जनबल दोनों बंट रहे हैं। मुख्य संगठन कमजोर व शिथिल हो रहा है। ये सभी अलग–अलग संगठन संस्थाएँ आर्य समाज के लिए भस्मासुर सिद्ध हो रहे हैं। स्वार्थी, पदलोलुप, अधार्मिक तथा सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का आर्य समाज व सभा संगठनों में तेजी से प्रवेश हो गया है और हो रहा है जो दयानन्द और आर्य समाज को व्यापार का रूप दे रहे हैं। कुछ गैर आर्य समाजी संगठनों की आर्य समाज की सम्पत्तियों तथा स्थानों पर गिद्ध दृष्टि पड़ रही है वे योजनाबद्ध तरीके से कब्जे कर रहे हैं और उनके हो भी गये हैं। यदि आर्य समाज और ऋषि भक्तों ने अधिकार व कब्जों वाली खतरनाक चाल को न समझा व रोका तो समाज मंदिरों व संस्थाओं में दयानन्द की जगह विवेकानन्द के चित्र दिखाई देंगे।

आर्य समाज स्थापना दिवस की तिथि ऐतिहासिक, यादगार व महत्त्वपूर्ण है। यह अवसर हम सब आर्यो को ऋषि तथा आर्य समाज के लिए सोचने, समझने, करने एवं व्रत संकल्प लेने की प्रेरणा दे रहा है। सोचो! विचारो! क्या खोया क्या पाया। कहाँ के लिए चले थे कहाँ जा रहे हैं? जिन उद्देश्यों तथा आदर्शों के लिए ऋषि आजीवन विषपाई रहे वे बातें आदर्श तथा मन्तव्य हमारे जीवनो, समाजों, संगठनों, सभाओं में हैं या नहीं? नहीं हैं तो हम गुनहगार हैं। हम अपने को धोखा दे रहे हैं हम समाजी तो बन गये मगर आर्यत्वपूर्ण जीवन दर्शन से दूर हो रहे हैं। हमारे जीवनों में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, प्रभुभक्ति, सत्संग, स्वाध्याय आदि छूट रहे हैं। इसी कारण हम पद प्रतिष्ठा, स्वार्थ, अहंकार आदि की दौड़ में भाग रहे हैं। आर्यो! यह कटु सत्य है। इस समय आर्य समाज बड़ी विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है इसे संभालने और बचाने की शीघ्र आवश्यकता है। ऋषि ने जो पाप, अधर्म, असत्य बुराईयों को हटाने के लिए जो सत्य ज्ञान तथा वैचारिक क्रांति की ज्वाला जलाई थी उसे बुझाने के लिए चारो ओर से षड्यन्त्र चल रहे हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि आर्य समाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी है। जीवन जगत को देने के लिए इसके पास अमूल्य प्रेरक ज्ञान, विचार एवं चिन्तन है। आज के भूले भटके मानव समाज को वैदिक चिन्तन, प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर सकता है। व्यवहारिक रूप से यह कथन सच है। जहाँ–जहाँ आर्य समाज है वहाँ–वहाँ जीवन है। आज ज्वलन्त प्रश्न हम सबके सामने है ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के विचारों, सिद्धान्तों व आदर्शों को कैसे प्रचारित–प्रसारित और जन–जन तक पहुंचाया जाये। विचारों, सिद्धान्तों, एकता, संगठन और प्रचार–प्रसार से व्यक्ति, संस्थाएं व संगठन जीवित, जागृत तथा अमर रहते हैं। इस समय हम सबका कर्त्तव्य है व्यर्थ के झगड़े, विवाद, स्वार्थ, अहंकार आदि को छोड़कर ऋषि मिशन तथा आर्य समाज की रक्षा, उन्नति, प्रगति के लिए त्याग व सेवाभाव से सोचें यही आर्य समाज स्थापना दिवस का संदेश है।

सार्वदेशिक सभा की ओर से
नववर्ष तथा आर्य समाज स्थापना दिवस की मंगल कामना

नव वर्ष यानि सम्वत् 2077 का आगमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 25 मार्च, 2020 को होगा। इसी दिन ऋषिवर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को वेदों का ज्ञान देने और मानव मात्र की सेवा का संकल्प लेकर सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी।

सार्वदेशिक सभा परिवार नववर्ष और आर्य समाज स्थापना दिवस के पावन पर्व पर समस्त आर्यजनों एवं पाठकों के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए सुख, समृद्धि तथा ऐश्वर्य की कामना करता है।

स्वामी आर्यवेश	प्रो. विट्ठलराव आर्य	पं. माया प्रकाश त्यागी
सभा प्रधान	*सभा मंत्री*	*कोषाध्यक्ष*

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ चित्रों के झरोखे से

बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ चित्रों के झरोखे से

कन्या गुरुकुल पंचगांव जिला–भिवानी का 30वाँ वार्षिकोत्सव समारोह

गोरक्षा के लिए हम सभी को कटिबद्ध होना पड़ेगा

– स्वामी आर्यवेश

आर्ष शिक्षा के द्वारा ही वैदिक संस्कृति सुरक्षित रह सकती है

– स्वामी प्रणवानन्द

कन्या गुरुकुल पंचगांव, जिला–भिवानी का 30वाँ वार्षिकोत्सव समारोह गत 7 व 8 मार्च, 2020 को बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी, राष्ट्रकवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, गुरुकुल पौंधा देहरादून के आचार्य धनंजय, ब्र. मनुदेव उड़ीसा, श्री धर्मपाल धीर व श्री धर्मवीर शास्त्री लोहारू आदि वैदिक विद्वानों के अतिरिक्त बाखड़ा क्षेत्र की विधायिका श्रीमती नयना चौटाला, दादरी के विधायक श्री सोमवीर सांगवान, पूर्व मंत्री श्री सत्यपाल सांगवान, पूर्व विधायक श्री सुखविंदर मांढी, दानवीर सेठ श्री जयदेव आर्य देवराला, श्री श्यामलाल पुनिया उपायुक्त जिला दादरी आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर उपस्थित जनता को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने जहाँ समाज में फैल रही अश्लीलता, अनैतिकता, चरित्रहीनता एवं महिलाओं पर अत्याचार को एक बड़ी चुनौती बताया और इनके पीछे शराब व अन्य नशीली चीजों का सेवन, गूगल एवं टेलीविजन के माध्यम से परोसी जा रही अश्लील सामग्री एवं विज्ञापनों को मुख्य रूप से जिम्मेदार बताया। स्वामी जी ने इस अवसर पर पूर्ण नशाबन्दी की माँग करते हुए श्रीमती नयना चौटाला से आग्रह किया कि वे एक महिला होने के नाते इस दिशा में पहल करें और हरियाणा में शराबबन्दी लागू करने का श्रेय लेवें। स्वामी आर्यवेश जी ने गोवंश की वर्तमान दुर्दशा पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि गाय को न केवल बचाने बल्कि उसकी सुरक्षा एवं संवर्द्धन के लिए भी हम सभी को कटिबद्ध होना पड़ेगा। जब तक पूरा समाज गोवंश के महत्त्व को समझकर उसे संरक्षण देने, संवर्द्धन करने तथा उसकी हो रही हत्या पर प्रतिबन्ध लगवाने के लिए प्रचण्ड अभियान नहीं चलायेगा तब तक गोवंश सुरक्षित नहीं हो पायेगा। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज ने पूरे देश में गोरक्षा महाअभियान प्रारम्भ किया हुआ है जिसके माध्यम से प्रान्तीय एवं केन्द्र सरकार पर दबाव बनाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि फरवरी माह में हरियाणा में यह अभियान सात दिवसीय जनचेतना यात्रा के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाया जा चुका है तथा आगामी दिनों में और भी कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गोरक्षा महाअभियान के अन्तर्गत जहां गोवंश की रक्षा उसके सम्मान एवं संरक्षण तथा संवर्द्धन के लिए पूरे समाज में चेतना पैदा करना है वहीं माँ के पेट में मारी जा रही बेटियों की सुरक्षा अर्थात् कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य पाप के विरुद्ध जागृति पैदा करना, पूरे देश में नशाबन्दी लागू करवाना तथा अश्लीलता और धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध जन–जागरण करना मुख्य कार्य है। स्वामी जी ने लॉर्ड मैकाले द्वारा चालू की गई शिक्षा प्रणाली को भारत के युवाओं के पतन का मुख्य कारण बताया। उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संस्कारों के प्रशिक्षण का कोई स्थान नहीं है जबकि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाता है। अतः यह आवश्यक है कि गुरुकुलों को और अधिक शक्ति सम्पन्न बनाया जाये।

इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपने उद्बोधन में आर्ष शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्ष शिक्षा के बिना वैदिक संस्कृति सुरक्षित नहीं रह सकती। सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय संस्कृत भाषा में ही है अतः संस्कृत पढ़ने–पढ़ाने की व्यवस्था पर बल दिया जाना चाहिए और यह आर्ष शिक्षा तथा गुरुकुलों में ही सम्भव है। स्वामी प्रणवानन्द जी ने लोगों से अपील की कि वे अपने बच्चों को गुरुकुलों में दाखिल करायें और उनके सर्वांगीण विकास के लिए गुरुकुलों का सहयोग करें।

दादरी के विधायक श्री सोमवीर सांगवान ने अपने सम्बोधन में कहा कि अब समाज को पतन से बचाने के लिए आर्य समाज के सिवाय और कोई विकल्प दिखाई नहीं देता। उन्होंने कहा कि मैं राजनीति में जरूर हूँ किन्तु राजनीति में नीचे से ऊपर तक जिस तरह का भ्रष्टाचार देखने को मिल रहा है उससे बड़ी निराशा होती है और मैं यह मानता हूँ कि आर्य समाज ही अब देश को बचायेगा। हमारे बच्चों को चरित्र एवं संस्कारों की शिक्षा आर्य समाज ही दे सकता है।

श्रीमती नयना चौटाला विधायक पाडला ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वामी आर्यवेश जी ने जो समस्याएँ रखी हैं मैं उनके विचारों से पूर्णतया सहमत हूँ और मेरा यह प्रयास रहेगा कि शराब और अश्लीलता आदि बुराईयाँ जो हमारी भावी पीढ़ी को बरबाद कर रही हैं उनको समाप्त करने के लिए मैं हर सम्भव प्रयास करूँगी। उन्होंने कहा कि गुरुकुल से पवित्र स्थान और कोई नहीं हो सकता और यह तो कन्याओं का गुरुकुल है। गुरु के कुल में आने वाली बेटियाँ सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें इतना अच्छा शुद्ध, सात्विक वातावरण मिल रहा है। उन्होंने गुरुकुल को हर प्रकार से सहयोग देने का आश्वासन दिया।

कन्या गुरुकुल की आचार्या चन्द्रकला जी ने मंच का संचालन बड़ी कुशलता से किया। सभी आगन्तुक अतिथियों का शॉल, स्मृति चिन्ह आदि देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करके उपस्थित जन–समूह को अत्यन्त प्रभावित किया। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, दहेज एवं पर्यावरण जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर सुन्दर नाटिका, गीतों व व्याख्यानों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी ने अपनी जोशीली कविताएँ सुनाकर लोगों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस उत्सव में गुरुकुल के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी, मंत्री श्री विजय सिंह जी, स्वागत समिति एवं गोशाला के अध्यक्ष श्री विजय पचगांव, श्री महेन्द्र सिंह, डॉ. सुरेन्द्र सिंह शास्त्री, श्री आनन्द सिंह शास्त्री आदि ने विशेष पुरुषार्थ करके कार्यक्रम को सफल बनाया। कन्या गुरुकुल की सभी अध्यापिकाओं एवं छात्राओं ने आगन्तुक लोगों के लिए भोजन आदि की समुचित व्यवस्था की। दो दिवसीय उत्सव का उद्घाटन जिला दादरी के उपायुक्त श्री श्यामलाल पुनिया ने ध्वजारोहण के साथ किया। जिला भिवानी के कर्मठ कार्यकर्ताओं में सर्वश्री इन्द्र सिंह आर्य, सेवानिवृत्त एस.डी.एम. श्री रामावतार आर्य, श्री राजेश डांगी, श्री हरपाल आर्य, श्री अजय कुमार शास्त्री भांडवा, श्री नरेन्द्र आर्य सिंहानी आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

'वैदिक सार्वदेशिक' पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	: दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड, (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-02
प्रकाशन की अवधि	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बृहस्पतिवार
मुद्रक का नाम	: प्रो. विट्ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
मुद्रक का पता	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
सम्पादक का नाम	: प्रो. विट्ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
सम्पादक का पता	: पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम-पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002

मैं प्रो. विट्ठलराव आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण, जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

प्रो. विट्ठलराव आर्य, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज इन सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर चलायेगा अभियान

– स्वामी रामवेश

नारी सशक्तिकरण के लिए मानसिकता बदलना आवश्यक

– पूनम आर्या

14 मार्च, 2020 को आर्य जगत की प्रसिद्ध विदुषी बहन कल्याणी आर्या कार्यक्रम में सम्मिलित हुई और उनके प्रभावशाली भजनों को सुनने के लिए भारी संख्या में लोग उमड़े। 14 मार्च, 2020 को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की बैठक भी आहुत की गई जिसमें आगामी ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में आयोजित होने वाले शिविरों के सम्बन्ध में निर्णय लिये गये। बैठक में परिषद् के सभी सक्रिय कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। 15 मार्च, 2020 को महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं पूरे कार्यक्रम का समापन भव्यता के साथ किया गया। इस अवसर पर सभी यजमान परिवारों, विशिष्ट अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जीवनी 'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश' भेंटकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर स्वामी रामवेश जी ने अपने वक्तव्य में घोषणा की कि आर्य समाज पूरे देश में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी व गोहत्या जैसी समस्याओं के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलायेगा। उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी के अनेक संस्मरण सुनाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री बिरजानन्द जी ने अन्धविश्वास और पाखण्ड के विरुद्ध मोर्चा लगाने की अपील की। बहन पूनम आर्या ने कहा कि महिलाओं को सम्मानित एवं सशक्त बनाने के लिए समाज की मानसिकता बदलनी होगी। इस 13 दिवसीय संकल्प महायज्ञ का सम्पूर्ण संयोजन, व्यवस्था, जनसम्पर्क एवं प्रचार–प्रसार का दायित्व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष एवं मिशन आर्यावर्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य तथा बेटी बचाओ अभियान की महामंत्री बहन प्रवेश आर्या ने किया। ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने अपने वक्तव्य में बताया कि स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आर्य समाज की विशेष गतिविधियों का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र है। उन्होंने कहा कि इस केन्द्र के अध्यक्ष और सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी अगले एक वर्ष का पूरा कार्यक्रम घोषित करेंगे। बहन प्रवेश आर्या ने स्वामी इन्द्रवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें यज्ञमय जीवन का एक उज्ज्वल उदाहरण बताया और कहा कि उनसे प्रेरणा लेकर ही हम सामाजिक जीवन में आज इस स्थान पर हैं और आज भी उनके जीवन से हमें निरन्तर प्रेरणा मिलती रहती है। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने नारी का प्राचीनकाल से समाज में जो सम्मान रहा उसे वेद मंत्रों से प्रमाणित करते हुए कहा कि पहले नारी के साथ छल से अत्याचार किये गये और वर्तमान में बल से अत्याचार किये जाते हैं। जिनके विरुद्ध आर्य समाज आवाज उठाता है। पूर्व में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी को निर्माण करने वाली बताकर पूरी नारी जाति को सम्मानित किया था।

बहन कल्याणी आर्या के ओजस्वी भजनों एवं उपदेशों को उपस्थित जनसमूह ने अत्यन्त उत्साह के साथ सुना और उनको पुनः आमंत्रित करने का आग्रह किया।

समापन अवसर पर अपना उद्‌बोधन देते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने त्यागी, तपस्वी आर्य संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उन्हें प्रखर व्यक्तित्व और बहुआयामी कृतित्व से अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले क्रान्तदर्शी आर्य नेता बताया। उन्होंने कहा कि अपने विचारों, योजनाओं, संकल्पों, प्रेरणाओं, आन्दोलनों और संघर्षों से ओत–प्रोत उनका जीवन हम सबको अनवरत आगे बढ़ते जाने की प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज का चरैवेति–चरैवेति जीवन आदर्श था। वे एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्था, एक मिशन, एक आन्दोलन और एक क्रांति की तरह थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों को स्थापित करने में आहूत कर दिया। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के पदचिन्हों पर चलकर हम सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक क्षेत्र में अग्रणी बनकर कार्य कर सकेंगे तथा निश्चित रूप से मानवता, समाज और राष्ट्र के हित में कुछ ठोस कदम उठा सकेंगे। स्वामी जी ने कहा कि गोहत्या, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, अश्लीलता आदि कुछ ऐसी सामाजिक बुराईयाँ हैं जिन पर आर्य समाज निरन्तर आघात कर रहा है और आगे भी पूरे देश में इन बुराईयों के विरुद्ध युद्ध स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं जिससे स्वयं को सुख और प्रसन्नता मिले और दूसरों का उपकार हो वे सभी यज्ञ कहलाते हैं। यज्ञ में प्राणीमात्र के कल्याण की भावना निहित है। उन्होंने कहा कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्मः' यज्ञ दुनिया का श्रेष्ठतम् कर्म कहलाता है। **यज्ञ के माध्यम से हम दूसरों को जीवनी शक्ति प्रदान करते हैं इससे जल, वायु, वातावरण, शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की शुद्धि होती है। 'वायुः अन्तरिक्षस्याधिपतिः' यज्ञ से वायु शुद्ध होकर औषधि रूप हो जाता है। स्वामी जी ने कहा कि आज पूरे विश्व में कोरोना वायरस के कारण त्राहि–त्राहि मची हुई है। भारत सहित पूरे विश्व में लाखों लोग इससे संक्रमित हो चुके हैं तथा बहुत बड़ी संख्या में लोग मृत्यु के ग्रास बन गये हैं। इस पर विडम्बना यह है कि इसका अभी तक कोई कारगर इलाज नहीं प्राप्त हो पाया है। स्वामी जी ने कहा कि इसका समाधान केवल यज्ञ द्वारा किया जा सकता है। यज्ञ में यदि गाय का घृत और औषधि युक्त सामग्री का प्रयोग किया जाये तो यह विषैले रोगाणु सर्वथा नष्ट हो जायेंगे। यज्ञ के धुंएं में विषैले जीवाणुओं तथा तत्त्वों को नष्ट करने की विलक्षण क्षमता होती है। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा, वायु मण्डल की पवित्रता, विविध रोगों का नाश तथा दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है। स्वामी जी ने समस्त आर्यजनों और आर्य संगठनों से अपील की कि इस भयानक विभीषिका को दूर करने के लिए बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन स्थान–स्थान पर किया जाये जिससे मानव मात्र को त्राण प्राप्त हो सके। स्वामी आर्यवेश जी देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से अपील की कि वे यज्ञ के इस वैज्ञानिक महत्त्व को समझते हुए पूरे देश में व्यापक रूप से यज्ञ आयोजित करवायें तथा उन यज्ञों में कोरोना वायरस को समाप्त करने वाली आयुर्वैदिक औषधियाँ सामग्री में मिलवाकर डलवायें। इससे भारत की प्राचीन यज्ञीय परम्परा पूरे विश्व में फैलेगी और भारत का गौरव बढ़ेगा साथ ही मानवता का अत्यन्त उपकार भी होगा।**

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम का आगामी एक वर्ष का कार्यक्रम

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम का अगले एक वर्ष का कार्यक्रम घोषित करते हुए बताया कि अप्रैल माह में 100 श्रेष्ठ अध्यापकों का सम्मान समारोह, मई माह में 100 व्यायाम शिक्षकों का प्रशिक्षण शिविर, जून माह में लड़के व लड़कियों के दो अलग–अलग शिविर लगाये जायेंगे जिनमें 500–500 लड़के व लड़कियाँ भाग लेंगी। 12 जून स्वामी इन्द्रवेश जी की पुण्यतिथि के अवसर पर संन्यासी, विद्वान, भजनोपदेशकों एवं कार्यकर्ताओं का भव्य सम्मान समारोह होगा। जुलाई माह में 100 प्रतिभावान छात्रों का सम्मान समारोह होगा, अगस्त माह में श्रावणी उपाकर्म तथा उसके बाद आर्य परिवार मिलन समारोह किया जायेगा, सितम्बर माह में सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर एवं प्रतियोगिता का आयोजन होगा, अक्टूबर माह में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर लगाया जायेगा, नवम्बर माह में विशाल युवा सम्मेलन होगा जिसमें पाँच हजार युवा भाग लेंगे, दिसम्बर माह में आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन, जनवरी, 2021 में आर्य विरक्त प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मान समारोह होगा, फरवरी माह में सामाजिक बुराईयों के खिलाफ जन–चेतना यात्रा निकाली जायेगी तथा मार्च माह में 14वाँ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा। स्वामी जी ने यह भी स्पष्ट किया कि वर्ष 2021 में पूर्ण कुम्भ मेला हरिद्वार में लगने जा रहा है अतः मेले में प्रचार शिविर का आयोजन होगा और वहीं पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ आयोजित होगा। स्वामी जी ने यह भी सूचित किया कि प्रत्येक महीने के तीसरे रविवार को आश्रम में यज्ञ एवं वैदिक सत्संग प्रारम्भ किया जायेगा और यह प्रतिमाह नियमित रूप से चलेगा। इसी प्रकार प्रत्येक महीने के पहले रविवार को गाँव टिटौली में यज्ञ एवं सत्संग नियमित चलाया जायेगा।

इस अवसर पर जिन महानुभावों को सम्मानित किया गया उनमें यज्ञ के मुख्य यजमान श्री अजयपाल आर्य एवं श्रीमती प्रीति आर्या, श्री राजवीर वशिष्ठ एवं श्रीमती कमला आर्या तथा विशिष्ट सहयोगी श्री महावीर सिंह ठेकेदार व श्रीमती कविता, श्री वीरपाल देशवाल व उनकी धर्मपत्नी के अतिरिक्त उन सभी दम्पतियों जिन्होंने यज्ञ में सपत्नीक व सपरिवार सम्मिलित होकर यजमान बने उनमें श्री वेद प्रकाश आर्य व श्रीमती विद्यावती, कर्नल आर. के. सिंह व श्रीमती कृष्णा, श्री अर्जुन सिंह डी.एस.पी. व श्रीमती शकुन्तला, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री व श्रीमती मनीषा, श्री विनोद कुमार व श्रीमती सुनील देवी, डॉ. विक्रम कुमार व श्रीमती ववित, आचार्य सत्यव्रत व श्रीमती सुमन, मा. प्रदीप कुमार व श्रीमती प्रभा देवी, डॉ. परविन्दर कुमार व श्रीमती सुमन, श्री विनीत कुमार व श्रीमती कविता, श्री विनय कुमार व श्रीमती ववित, श्री सुरेन्द्र यादव व श्रीमती बबली, श्री सुरेन्द्र यादव व श्रीमती अनिता, मा. रामेश्वर आर्य व श्रीमती संतोष, श्री अजय व श्रीमती विनीता, श्री विक्रम व श्रीमती मनीषा, श्री यज्ञवीर व श्रीमती प्रवेश, श्री बबरूभान व श्रीमती सुषमा, श्री धर्मवीर व श्रीमती राजबाला, श्री प्रदीप शास्त्री व श्रीमती चन्दा, श्री धर्मपाल व श्रीमती सुनीता, श्री बाबूलाल आर्य व श्रीमती वीरमती आर्या, मा. जगदीश चन्द्र व श्रीमती शशि, श्री अजीत सिंह सिन्धु व श्रीमती उर्मिल, डॉ. स्वतन्त्रानन्द व श्रीमती राजबाला, श्री रविन्द्र व श्रीमती रेणु, श्री अनिल धनखड़ व श्रीमती रेखा धनखड़, श्री महेन्द्र सिंह आर्य व श्रीमती भारती आर्या, मा. सुभाष आर्य व श्रीमती निशा, श्री अनिल कुमार व श्रीमती सोनू, श्री भगवान व श्रीमती राजवन्ती, श्री अनिल कुण्डू व श्रीमती अंजू, श्री नरदेव आर्य व श्रीमती उर्मिला, श्री सत्यप्रिय व श्रीमती रश्मि, श्री सोमदेव व श्रीमती कविता, श्री अजय कुमार व श्रीमती रीतू, श्री महेन्द्र सिंह व श्रीमती रामकौल, श्री कश्मीर सिंह कुण्डू व श्रीमती सुशीला, श्री यशदेव शास्त्री व श्रीमती सरिता, श्री कृष्ण कुमार प्रजापति व श्रीमती बाला, श्री जिले सिंह सैनी व श्रीमती विमला, श्री जिले सिंह आर्य व श्रीमती तारावती, मा. रमेश आर्य व श्रीमती नीलम, श्री विरेन्द्र कुण्डू व श्रीमती कृष्णा, श्री महासिंह व श्रीमती सावित्री, श्री राजेन्द्र सिंह व श्रीमती ओमवती, श्री सुभाष व श्रीमती अनिता, श्री तकदीर आर्य व श्रीमती नीलम, श्री पाणिनी व श्रीमती शकुन्तला, श्री रामफल सिंह व श्रीमती संतोष, श्री नरेश शर्मा व श्रीमती पिंकी शर्मा, श्री राजवीर व श्रीमती विमला, श्री धर्मदेव वशिष्ठ व श्रीमती रीना, राजवीर मलिक व श्रीमती प्रमिला, श्रीसंजय व श्रीमती निर्मला, श्री दीपक व श्रीमती प्रीति, श्री देवी सिंह आर्य व श्रीमती पूनम, श्री राजकुमार हुड्डा व श्रीमती सुमन, श्री नवदीप राठी व श्रीमती रीतू राठी, श्री रामराज कादियान व श्रीमती सुमन, प्रिं. महेन्द्र सिंह शास्त्री व श्रीमती कृष्णा, श्री विनोद हुड्डा व श्रीमती अनिता हुड्डा, श्री इन्द्रजीत शास्त्री व श्रीमती नीरज (बेटे आयुष के साथ), डॉ. विशिष्ट सिंह व श्रीमती रितुरानी (अपनी दो बेटियों कुमारी लिवांती व कुमारी कुलीना के साथ), डॉ. सुशीला धर्मवीर इन यजमान परिवारों के अतिरिक्त श्रीमती मूर्ति देवी, श्रीमती जानकी देवी, श्रीमती निर्मला देवी, कुमारी पूनम आर्या, श्रीमती मीरा अरोड़ा, श्रीमती सुनीता खासा आदि ने अपना पूरा समय देकर यज्ञ में योगदान दिया। इनके अतिरिक्त सर्वश्री जांगेराम आर्य व पं. रामनिवास आर्य खिदवाली, श्री दयानन्द शास्त्री, श्री वीरेन्द्र शास्त्री, डॉ. महावीर सिंह आर्य, श्री राम कुमार आर्य, डॉ. नारायण सिंह आर्य, श्री जय भगवान आर्य, श्री सत्यवीर सिंह आर्य

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम आर्य समाज की गतिविधियों का राष्ट्रीय केन्द्र है

– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

स्वामी इन्द्रवेश जी का जीवन यज्ञमय था

– प्रवेश आर्या

फरमाणा, मा. अजीत सिंह भैंसवाल, ब्र. सहसरपाल आर्य, ब्र. सोनू कुमार आर्य, ब्र. अमन आर्य, ब्र. उत्तमदेव आर्य, ब्र. श्रीपाल आर्य, आर्य विकास, आर्य अमित, आर्य ध्रुव आदि इसी प्रकार कु. एकता आर्या, कु. रीमा आर्या, कु. राजकुमारी आर्या, कु. सुमन आर्या, कु. पूजा आर्या, कु. प्राची आर्या, कु. किरण फरमाणा, कु. मनीषा, कु. मंजू व कु. मुकेश आर्या ने भी अपना पूरा समय देकर यज्ञ की व्यवस्था में योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

समापन के अवसर पर विशेष रूप से फिल्म निर्माता श्री कुलदीप रूहिल मुम्बई व श्री विवेक मलिक एडवोकेट अमेरिका, का भी विशेष सम्मान किया गया। यज्ञ में डॉ. विवेकानन्द शास्त्री जी का विशेष योगदान रहा। समारोह में श्री दलवीर सिंह आर्य प्रधान आर्य युवक परिषद् हिसार, श्री जयवीर सोनी, श्री कृष्ण कुमार आर्य, डॉ. बलवन्त सिंह आर्य हिसार, श्री नफे सिंह आर्य प्रधान, डॉ. राजेश आर्य मंत्री, मा. राजेन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज फरमाणा, श्री राजवीर मलिक, श्री कपूर सिंह मलिक व श्री संजय मलिक मोखरा, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कर्णधार श्री रामपाल शास्त्री, प्रधान श्री चन्द्रदेव शास्त्री व श्री बलजीत सिंह सांगवान, झज्जर से श्री रमेश वैदिक, मा. द्वारका प्रसाद व श्री परमार, डॉ. शीशराम महम, श्री नरेन्द्र डांगी जिला पार्षद् मदीना व श्री करतार सिंह शास्त्री, श्री महावीर सिंह डांगी, डॉ. उदयभान, श्री हरदेव सिंह आर्य राजस्थान, श्री सुखवीर सिंह दलाल, श्री धर्मेन्द्र आर्य छपरौली व श्री अवनीश आर्य रठौड़ा, प्रिं. आजाद सिंह व श्री अंकित बांगड़ सोनीपत, श्री सज्जन सिंह राठी व श्री अजीतपाल, श्री संजय पहलवान, श्री बलवान सिंह आर्य व श्री दयानन्द आर्य जीन्द, श्री हरपाल आर्य भिवानी, गुरुकुल सिंहपुरा के मुख्याध्यापक श्री महिपाल सिंह, पी.टी.आई गजनूप सिंह, व्यवस्थापक श्री राजेन्द्र सिंह तथा श्री लीलाराम, आचार्य सत्यकाम रोहतक, आर्य समाज तिलकनगर, रोहतक से श्री सुखवीर सिंह दहिया, श्री अनूप श्योराण, प्रिं. रघुवीर सिंह, श्री करतार सिंह सहारन, श्री कंवर सिंह गुड़िया, श्री जयसिंह गिल, श्री जगदेव हुड्डा आदि महानुभाव कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

समाज में फैली सभी बुराईयों के विरुद्ध एक मजबूत संकल्प के साथ यज्ञ का कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।